INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 7 | AUGUST - 2023

अंबेडकर की जाति व्यवस्था पर आलोचना

डॉ. पिंकी
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, हिंदू गर्ल्स कॉलेज, जगाधरी.

प्रस्तावना

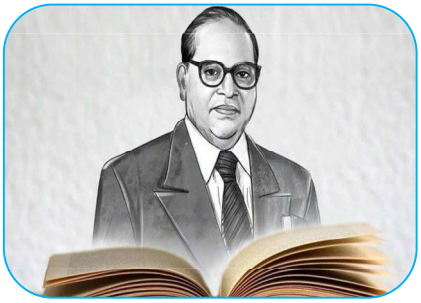

यह शोधपत्र इस बात की जांच करता है कि अंबेडकर ने भारतीय समाज में जाति व्यवस्था की संरचना को कैसे चुनौती दी और इसे ध्वस्त करने में कैसे योगदान दिया। अंबेडकर, जो स्वयं अछूत थे, ने वही अपमान और यातनाएँ झेली जो उस समय हर अछूत को सहनी पड़ती थीं। उन्होंने समाज में व्याप्त असमानता और अमानवीय परिस्थितियों को अनुभव किया, जिसमें लोगों के पास पर्याप्त भोजन नहीं था, सिर पर छत नहीं थी, और महिलाएँ अपने शरीर ढकने के लिए वस्त्रों से वंचित थीं। अंबेडकर इन समस्याओं के मूल कारण को समझना चाहते थे और उन्होंने पाया कि हिंदू धर्म द्वारा अनुमोदित सामाजिक व्यवस्था इसका एक प्रमुख कारण थी। उनके शब्दों में, "यह धर्म और सामाजिक व्यवस्था ने उन्हें बर्बाद कर दिया। लेकिन यह उन्हें रोकने वाला नहीं था। यह हिंदुओंको और अंततः भारत को भी बर्बाद कर देगा।" (चलम, 46)

अंबेडकर की जाति व्यवस्था की समझ

अंबेडकर ने अपने लेखन और भाषणों में जाति व्यवस्था की बुराइयों को गहराई से उजागर किया। उनके अनुसार, जाति व्यवस्था केवल श्रम का विभाजन नहीं है बल्कि एक पदानुक्रम है जिसमें एक श्रमिक दूसरे से ऊंचा है। यह विभाजन स्वतः स्फूर्त नहीं था, न ही यह प्राकृतिक क्षमताओं या पसंद पर आधारित था। इसमें व्यक्तिगत भावना का कोई स्थान नहीं था। यह पूर्वनिर्धारण के सिद्धांत पर आधारित था।

अंबेडकर ने लिखा, "जाति व्यवस्था का तात्पर्य व्यक्तियों को उनके मूल प्रशिक्षण के आधार पर नहीं, बल्कि उनके माता-पिता की सामाजिक स्थिति के आधार पर पहले से कार्य आवंटित करना है।" (अंबेडकर, खंड 1, 35) उन्होंने यह भी कहा कि जाति व्यवस्था ने रोजगार के अवसरों को सीमित किया। उनके अनुसार, "जाति एक ऐसी संस्था थी जिसने मानव की प्राकृतिक शक्तियों और प्रवृत्तियों को सामाजिक नियमों के अधीन कर दिया।" (अंबेडकर, 37)

उन्होंने यह भी कहा, "जाति व्यवस्था ने न तो आर्थिक दक्षता बढ़ाई और न ही हिंदू समाज में सुधार किया। यह हिंदुओं को असंगठित और निरुत्साहित कर गई।"

वर्ण व्यवस्था और शूद्रों की उत्पत्ति

अंबेडकर का मानना था कि प्राचीन काल में केवल तीन वर्ग थे और उस समय व्यक्ति को अपनी इच्छा से वर्ग बदलने की स्वतंत्रता थी। वर्णों की उत्पत्ति ब्राह्मणों और क्षत्रियों के बीच श्रेष्ठता के संघर्ष से हुई। राजा शूद्र, जो विश्वामित्र के समर्थक थे, इस संघर्ष में मुख्य भूमिका निभाते थे। लेकिन वशिष्ठ की विजय के बाद शूद्रों को निम्न सामाजिक स्तर पर रखा गया। अंबेडकर के अनुसार, ब्राह्मणों ने शूद्रों को नीचा दिखाने के लिए उनके उपनयन संस्कार को रोक दिया।

जातीय सिद्धांत का खंडन

अंबेडकर का मानना था कि आर्य भारत के बाहर से नहीं आए थे और वे मूल निवासियों से नस्लीय रूप से भिन्न नहीं थे। उन्होंने आर्य आक्रमण सिद्धांत को एक पश्चिमी कल्पना कहा। उनके अनुसार, ऋग्वेद में आर्यों के आक्रमण का कोई प्रमाण नहीं है।

टूटे हुए लोगों की उत्पत्ति

अंबेडकर ने कहा कि अछूत बनने से पहले गांव के बाहर रहने वाले "टूटे हुए लोग" थे। ये लोग पराजित कबीले के सदस्य थे जो गांव के बाहरी हिस्से में रहते थे। उन्होंने अपने समाज को बचाने के लिए गांवों की रखवाली का कार्य किया, लेकिन वे सामाजिक बहिष्कार का शिकार बने और अछूत कहे जाने लगे।

अछूतों की उत्पत्ति पर अंबेडकर की व्याख्या

अंबेडकर के अनुसार, अछूतों की उत्पत्ति का मुख्य कारण बौद्ध धर्म और गोमांस का सेवन था। बौद्ध धर्म के उदय और गोमांस खाने की प्रथा के कारण ब्राह्मणों ने टूटे हुए लोगों और बौद्धों से नफरत की।

अंबेडकर ने यह भी कहा कि "ब्राह्मणों ने अपनी सामाजिक स्थिति को पुनः प्राप्त करने के लिए गोमांस खाना छोड़ दिया और गाय को पवित्र घोषित कर दिया।" (अंबेडकर, 320) इस प्रक्रिया में, जो लोग गोमांस खाते रहे, वे अछूत घोषित कर दिए गए।

निष्कर्ष

अंबेडकर ने जाति व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, और अछूतों की उत्पत्ति पर अपने विचारों के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि इन प्रथाओं ने भारतीय समाज को विभाजित और कमजोर किया। उनके विचार आज भी सामाजिक समानता और न्याय के संदर्भ में प्रासंगिक हैं।

संदर्भ

1. केतकर, एस.वी. *हिस्ट्री ऑफ कास्ट इन इंडिया।* नई दिल्ली: लो प्राइस पब्लिकेशन, 1990।
2. कनानाकिल, जोस, संपादक। *अनुसूचित जातियाँ और असमानता के खिलाफ संघर्ष।* नई दिल्ली: इंडियन सोशल इंस्टीट्यूट, 1983।

3. माइकल, एस.एम. *आधुनिक भारत में दलित।* नई दिल्ली: विस्तार पब्लिकेशन, 1991।
4. निर्मल, अरविंद पी., संपादक। *बी.आर. अंबेडकर: ए सेंचुरी ट्रिब्यूट।* मद्रास: गुरुकुल लूथेरन थियोलॉजिकल कॉलेज एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, 1991।
5. रोड्रिग्स, वैलेरियन, संपादक। *द एसेंशियल राइटिंग्स ऑफ बी.आर. अंबेडकर।* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002।
6. ज़ेलियट, एलीनॉर। *फ्रॉम अछूत टू दलित।* 3रा संस्करण। नई दिल्ली: मनोहर पब्लिकेशन, 2002।